Chhatrapati Shahu Ji Maharaj
University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 11487951

Roll No. 24029000803
Total Mark 53/75.00
Exam MA-III_ODD_EXAM_NOV_2025
Subject A010904T - Surdas (Elective)

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	4/5						
1B	4/5						
1C	3/5						
1D	3/5						
1E	4/5						
1F	3/5						
1G	3/5						
1H	3/5						
1I	3/5						
2A	0/15						
2B	11/15						
2C	0/15						
2D	0/15						
3A	0/15						
3B	12/15						
3C	0/15						
3D	0/15						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

PART-I

Date of Exam 13/11/2025 Shift 3rd S Room No. 05

Paper Code A010904T Subject Surdas Year/Sem 3rd sem

Name of Candidate Ragini

Roll No. 2 4 0 2 9 0 0 0 8 0 3

Signature of Candidate: Ragini

Signature of Invigilator

COE Facsimile

PART-II

MARKS OBTAINED

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures | Max. Marks

Total Marks in Words

A 0 1 0 9 0 4 T

Paper Code

Signature of Evaluator

PART-III

Course Master of Arts (Hindi)

Session 2025-26 Year/Semester III- sem

Subject Surdas

Paper Code

A	0	1	0	9	0	4	T

Exam Date

1	3	1	1	2	0	2	5

Name of Candidate

RAGINI

Father's Name

VINDHYACHAL SHARMA

महाविद्यालय का कोड College Code: K N 0 0 9

परीक्षा केन्द्र का कोड Exam Centre Code: K N 0 0 9

परीक्षा का प्रकार Type of Exam

संस्थागत Regular ● | भूतपूर्व परीक्षार्थी Ex. Student ○

व्यक्तिगत Private ○ | बैक पेपर परीक्षा Back paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.

11487951

A 0 1 0 9 0 4 T

Paper Code

PART-IV

नामांकन संख्या Enrollment Number: C S J M A 2 4 0 0 0 1 5 9 1 9 0

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 2 4 0 2 9 0 0 0 8 0 3

पेपर कोड Paper Code: A 0 1 0 9 0 4 T

Signature of Candidate: Ragini

Signature of Invigilator

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट : 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पन्ने के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें।
2. बॉक्स में भरी जाने वाली प्रविष्टियाँ बायीं तरफ से शुरू की जाएँ। 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जाएँ।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below blacken the circles completely.

Correct method	Incorrect method
① ● ③ ④	✓ ✗ ◉ ●

4. Make no Stray marks on this sheet.
5. **DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.**

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़े।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र कोड सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृष्ठ (1–24) से कम है या फटे हुए है, तो परीक्षा शुरू होने के पूर्व दूसरी उत्तर पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसके परीक्षा शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर कक्ष निरीक्षक को तत्काल सूचित करे, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पैंसिल का प्रयोग न करें।
10. B कोपी या अतिरिक्त ग्राफ नहीं दिया जायेगा।

IN ORDER TO AVOID UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/ electronic watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Paper, Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-32) or any other kind of damage in your answer script, if found than change the answer script immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g. Subject Code, Subject Name and Question of the Question Paper during first THIRTY MINUTES of the commencement of the exam, so that it can be corrected in TIME. After that no corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over papers should fill in status as Carry Over. Those appearing as Ex-Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

अनुचित साधन से बचने हेतु:

1. उत्तर पुस्तिका के निर्देशित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखे तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, कोपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लैस साइंटफिक केल्कुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रुपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numberals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

	1	8	1	5	4	3	2	1	6	9
⓪	⓪	⓪	⓪	⓪	⓪	⓪	⓪	⓪	⓪	⓪
①	●	①	●	①	①	①	①	●	①	①
②	②	②	②	②	②	②	●	②	②	②
③	③	③	③	③	③	●	③	③	③	③
④	④	④	④	④	●	④	④	④	④	④
⑤	⑤	⑤	⑤	●	⑤	⑤	⑤	⑤	⑤	⑤
⑥	⑥	⑥	⑥	⑥	⑥	⑥	⑥	⑥	●	⑥
⑦	⑦	⑦	⑦	⑦	⑦	⑦	⑦	⑦	⑦	⑦
⑧	⑧	●	⑧	⑧	⑧	⑧	⑧	⑧	⑧	⑧
⑨	⑨	⑨	⑨	⑨	⑨	⑨	⑨	⑨	⑨	●

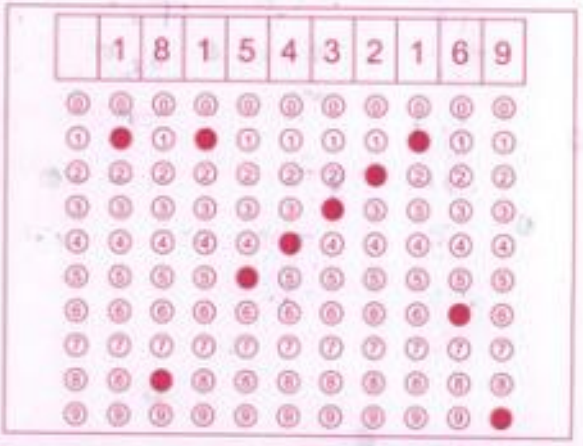

Note - If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns.

Paper Code A 0 1 0 9 0 4 T 01

खण्ड 'अ'

उत्तर संख्या, 01 [क]

सूरदास कृष्णभक्ति काव्यधारा के प्रमुख कवि के रूप में हिन्दी साहित्य में प्रख्यात है। इनका जन्म रुनकता में हुआ था। इनके जन्म पर विद्वानों में मतभेद है। इन्होंने कृष्ण काव्य रची हि जग में ख्याति कमाई। सूर के सम्बंध में अधिकतर सभी क्षेत्रों में विद्वानों में मतभेद है।
सूरदास कृष्ण भक्ति काव्य धारा के उच्च कोटि के कवि, विचारक तथा दार्शनिक है।
सूर ने अपने जीवन काल में मुख्यतः कृष्ण का ही बखान किया है तथा अन्य किसी देवी देवता में इनकी कोई रुचि नहीं है। उन्होंने अपने जीवन में रामकाव्य पर अनेक रचनाएं लिखी है तथा अपने योगदान से हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि की है। सूरदास कृष्णकाव्य के माध्यम से असामान्य में कोमलता, सहनशीलता तथा तारतम्यता का संचार किया है। सूर ने अपने जीवन में श्री कृष्ण की लीलाओं का बखान कर एवं उन्हीं का गुणगान कर अपना सम्पूर्ण जीवन श्री कृष्ण की सेवा में व्यतीत कर दिया तथा श्री कृष्ण के भक्ति को

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A 0 1 0 9 0 4 7

अपने जीवन का आधार बनाया।
सूर ने श्री कृष्ण को एक पद्य के नायक के भाँति नहीं वरन अपने आराध्य देव के भाँति कृष्ण की वंदना की है। श्री कृष्ण के भक्ति में ही लीन रहे और उन्होंने उन्हीं की लीला का गान किया है। सूरदास पहले एक सच्चे व भक्त हैं बाद में कवि।

उत्तर सं० [ख]

सूरदास ने अपने जीवन काल में अनेक रचनाएं लिखी जिनमे सूरसागर, साहित्य लहरी, सूरसारावली से इन्हे अधिक प्रसिद्धि मिली किन्तु इन्हें अधिक प्रसिद्धि उसमें काव्य भ्रमरगीत के माध्यम से भी मिली थी।
भ्रमरगीत सूर दास का एक अप्रतिम ग्रन्थ है इस ग्रन्थ में सूर ने भक्ति के ऊपर ज्ञान की विजय करने तथा गोपियों के विरह तथा पीड़ा को कम करने के लिए उद्धव को वृन्दावन भेजा। जहाँ उद्धव ने

अपने ज्ञान के प्रभाव से गोपियो के मन पर साकार के अपेक्षा निराकार ब्रह्म की विजय कराने का प्रयास किया। किन्तु उनके सारे प्रयास व्यर्थ सिद्ध हुए। उद्धव को श्री कृष्ण द्वारा वृन्दावन गोपियो को ज्ञान मार्ग के परमात्मा के दर्शन तथा उसकी उपयोगिता की महत्व बताने के लिए भेजा।

भ्रमरगीत की विशेषताएँ —

(i) भ्रमरगीत परम्परा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। इस परम्परा में किसी अन्य वस्तु के माध्यम से वास्तविक वस्तु पर कटाक्ष किया जाता है।

(ii) सूर के भ्रमरगीत का उद्देश्य उद्धव के ज्ञान पर अभिमान को नष्ट करना था।

(iii) सूर के भ्रमरगीत मे गोपिया एक भवँर के माध्यम से उद्धव की उपहास करती है।

(iv) भ्रमरगीत परम्परा के अनुसार गोपिया अलि कहकर उद्धव को सम्बोधित करती है तथा उनपर व्यंग्य के बाण छोड़ती हुई उनकी ज्ञान को निंदा करती

उत्तर सं० 1 (ग)

प्राचीन समय में सूरदास के काल में श्री कृष्ण भक्त कवियों की लाखों अनेक कवि थे। जो भक्त कृष्ण पर अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देते है इन्हे कृष्ण काव्य में अष्टकूट से सम्बोधित किया गया है। श्री कृष्ण के काव्य का लक्ष्य सौ अधिक मायन प्रचलित था। कृष्ण काव्य के माध्यम से लोगो के निराशा में आशा का उदय हुआ था तथा उनका मन बन्धन दृढ़ होते थे।

सूरदास का अष्टकूट में सर्वोत्तम स्थान है उन्होने अपनी भक्ति से कृष्णकाव्य को पराकाष्ठा को ... किया है तथा अपने असमान्य ... का वरवण्ड श्री कृष्ण के स्वरूप तथा बाललीला का वर्णन जो उन्होने किया है इसका सजीव चित्र खीचा है उसका वर्णन अत्यंत कठिन है

सूरदास दृष्टिहीन होने के बावजूद प्रकृति चित्रण, श्रृंगारवर्णन तथा कृष्ण की बाल लीलाओ का सजीव चित्रण करने में माहिर थे। उन्होने अपने सम्पूर्ण जीवन में श्री कृष्ण के काव्य स्वरील कि तथा कृष्ण काव्य लिखते लिखते ही अपने ज्ञान के अन्तरचक्षु की सहायता से सम्पूर्ण विश्व का वर्णन कर उसको इतना सजीव चित्र खीचा जो अप्रतिम है।

Do Not Write anything in this Portion

उत्तर संख्या - 1 (बि)

सूरदास कृष्णकाव्य के प्रणेता है। इन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवनकाल में कृष्णकोश ही लिखा है। सूरदास की भाषा अकरा बुबके तीव्र अधिकार था इन्होंने अपने काव्य में इतना सरल और सहज भाषा का प्रयोग किया है कि ये जनसामान्य के द्वारा आसानी से पढ़ा जा सकता है।

सूरदास की भाषा - अनेक विद्वानो का मत है कि सूरदास का जन्म मथुरा के निकट ही हुआ था। मथुरा में ब्रजभाषा का प्रचलन है अतः सूरदास ने भी अपने काव्य में ब्रज[illegible] को ही अपनाया किया है। इन्होंने ब्रजभाषा में रचनाए करते हुए कुल्यगत लक्षणों का पूरा ध्यान रखा है तथा अपने काव्य में भाषा की मधुरता तथा कोमलता को विद्यमान रखा है।
इस प्रकार सूरदास ने अपने काव्य में ब्रजभाषा से का प्रयोग किया है तथा माधुर्य भाव का ध्यान रखा है। सूर ने अपने काव्य में ब्रजभाषा के साथ - साथ जन सामान्य की भाषा का प्रयोग किया है। इन्होंने अपने काव्य में पश्चमोर भाषा का प्रयोग किया है। - सामान्यत: सूरदास ने अपनी सारी रचनाए ब्रजभाषा में की किंतु कुछ स्थानो पर इन्होंने अवधी तथा कन्नौजी भाषा के शब्द का अनुप्रयोग देखने को मिलता है।

Paper Code A01090 4T

06

<u>उत्तर संख्या 5 (इ-1)</u>

सूरदास सदैव श्री कृष्ण की लीलाओं का बखान करते रहते थे। इन्होंने अपने काव्य 'दर्शन', सम्पूर्ण श्री कृष्ण को समर्पित कर दिया है। सूरदास के नाम तथा जन्म के सम्बन्धों में मतभेद है किंतु सूर सदैव से ही अपने काव्य तथा प्रेमसागर के लिए विश्व विख्यात है। है उन्हें किसी नाम या पहचान की आवश्यकता नहीं है उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से जो प्रकाश फैलाया है वो सम्पूर्ण जगत को प्रकाशमय करने के लिए पर्याप्त है।

सूर को असामान्य में अनेक नामों से जाना जाता है। सूरदास, सूरजदास, सूरश्याम इत्यादि। सूरदास को विद्वानों ने सूर का प्रतीक बताया है तथा अपने काव्य में सूरदास की विशेषताओं का उल्लेख किया है।

सूरकाव्य की कुछ सामान्य विशेषताएं दृष्टिगोचर होती है।

(क) कृष्णकाव्य की प्रधानता

(ख) सूरदास के काव्य में अत्यधिक वात्सल्यभाव तथा दास्यभाव से अपने आराध्य की वन्दना की गई है जो सूर के काव्य की ही विशेषता है।

Paper Code A 0 1 0 9 0 4 T 07

③ सूरदास के काव्य मे प्रमुखत: ब्रजभाषा का उपयोग किया गया है।

④ इन्होंने अधिकतर काव्य रसमाए माधुर्य शैली मे लिखी है। तथा इनमे प्रामाणिकता का बोलबाला है।

⑤ सूरदास ने अपने काव्य रचना में मुख्य रूप से अन्य प्रकार की भक्ति का उल्लेख किया है

i) दास्यभाव की भक्ति
ii) माधुर्यभाव की भक्ति
iii) सख्याभाव की भक्ति
iv) वात्सल्य भाव की भक्ति
v) शांति भाव की भक्ति।

उत्तर सं० → ५ (घ)

सूरदास के काव्य मे गोपिया उनके अप्रतिम काव्य की प्रमुख कारक रही है। कवि ने जिस प्रकार गोपियो का सजीव वर्णन किया है उस पर इनके न जन्मांध होने पर संदेह होता है।
सूरदास ने गोपियों के माध्यम से श्री कृष्ण को चित्रित किया है। गोपिया श्री कृष्ण की परछाई के रूप मे गोकुल मे निवास करती है वो कृष्ण के हृदय में

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A0109004T

08

निवास करती है कवि ने गोपियो को श्री कृष्ण के जीवन की संगिनी तथा विरोधी बताया है।
गोपिया श्री कृष्ण की अनन्य भक्त है तथा उन्हें अपने आराध्य के रूप मे पूजती है एक तरफ वे श्री कृष्ण को अपने प्रेमी के रूप मे प्रेम करती है वही दूसरी तरफ उनके चरणो की वंदना करती है तथा कृष्ण के प्रति अपने हृदय असीम प्रेम का सागर लिये फिरती है।

गोपियो के विरह वर्णन मे कवि इतनी सजीवता ला दी है कि उनके भ्रमो होने यह संदेह होता है कृष्ण के सब कुछ छोड मथुरा प्रस्थान पर गोपियो का हृदय भी कृष्ण के साथ ही चला जाता है अपने प्रियतम के बिना अर्धु ऐसा शरीर और मन नगरी का उन्हे कृथा काम वे अपने आखो मे अश्रु लिये श्री कृष्ण को जाते हुई देखती है तथा उनके कदम पीछे की ओर नही आ रहे व पीछे जाकर भी क्या लाभ।
श्री कृष्ण के विरह मे गोपियाँ बिना सुधबुध के घूमती रहती है। कवि ने गोपियो का अत्यन्त सजीव वर्णन किया है तथा उन्हे अपने काव्य मे एक अलग सम्मान की दृष्टि से चित्रित किया है।

Do Not Write anything in this Portion

उत्तर संख्या - 1 (घ)

सूरदास ने कृष्ण काव्य से सम्बन्धित अनेक रचनाएं लिखी है सभी रचनाओं में उच्च कोटि की काव्य रचना हुई है तथा उनका महत्व अपने स्थान पर है किन्तु सूर को कृष्ण काव्य लेखन में सर्वाधिक ख्याति अपने रचना सूरसागर के माध्यम से मिली।

सूरसागर सूरदास की सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना है इस रचना की विषय वस्तु मुख्यतः श्रीमद भागवत पुराण से ली गई है इसका भक्ति सम्बन्धी है।
सूरसागर में श्रीकृष्ण के साथ साथ कवि ने उनकी प्रेयसी राधा के सम्बन्ध में भी एक खण्ड में विचार प्रस्तुत किये है।

सूरदास के काव्य का आधार कृष्ण है तथा कृष्ण का आधार राधा है सूरदास ने राधा की पीरा को महसूस किया है तथा उसकी सजीव चित्रण किया है राधा का महत्व श्री कृष्ण के जीवन की भांति सूर के काव्य में भी बहुत अधिक है।
सूरदास ने राधा के महत्व को दर्शाने के लिए अपने रचना सूरसागर में राधा-प्रसंग नामक प्रसंग लिखा है जिसमे राधा की महिमा का बखान किया गया है। तथा सूर सागर में राधा के महत्व को दर्शाया गया है

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A010904T

10

राधा सिर्फ श्री कृष्ण की प्रेयसी नहीं वरन स्वयं आदिशक्ति तथा प्रकृति का स्वरूप हैं जिनकी महत्ता को बखान शब्दों के माध्यम से सम्भव नहीं है। राधा के चरणों का बखान कवि ने करते हुए कहा है कि [illegible] चरणों की कृपा जिसपर पड़ [illegible] जाए वो धन्य हो जाता है। तथा जीवन में कोई कष्ट नहीं बचता। राधा के चरणों की तुलना कवि ने कमल से कि है—

हरिपद कोमल, कमल से।

उत्तर सं० → 1 (ग)

सूरदास ने कृष्णकाव्य के साथ साथ वातावरण तथा प्रकृति का चित्रण भी अभूतपूर्व किया है। इन्होंने अपने सूरसारावली में गोकुल के गायों का तथा वृन्दावन के वनों का जो बखान किया है उससे ये ज्ञात होता है कि सूरदास प्रकृति चित्रण में भी माहिर थे। सूर ने तुलसी की भाँति सम-रूप शैली में प्रकृति का चित्रण किया है।

सूर ने कृष्ण के साथ साथ उनके क्रीडास्थली वृन्दावन के वनो का भी अप्रतिम चित्रण किया है। सूर के अनुसार तो कृष्ण को वृन्दावन की वो पेड़ो की छाया तथा यु ग्वालो सखाओ के साथ गौचराना कृष्ण को स्वर्ग से भी अधिक प्यारा था।

कृष्ण कहते है कि [illegible] की जंगलो मे ग्वालो तथा सखाओ के साथ वो गौ चराना मे जो आनन्द था वो पूरा मथुरा के राजमहलो मे कहा है उन्हे गोकुल के वो मिट्टी के घर तथा गोकुल के की वे ग्वाल बालाए तथा पेड़ पौधो तथा वन के जन्तु पाही सभी अत्यन्त भाते थे।

सूर ने अपने काव्य मे प्रकृति चित्रण अत्यन्त सजीवता के साथ किया है तथा अपने काव्य मे प्रकृति को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया है सूर के अनुसार पेड़ो की छाया तथा पशु तथा ग्वाले व गाए वृन्दावन के सभी जीव जन्तु भी कृष्ण को बहुत याद करते है तथा गोकुल की वो माटी जिसमे उनके [illegible] खेले हुए उन्हे वो [illegible] बहुत स्मरणीय है तथा उनके हृदय मे [illegible] अलग ही स्थान है।

Paper Code: A01 0904 T

उत्तर संख्या . [8]

सूरदास ने कृष्णकाव्य मे मुख्यतः तीन शैलीयो मे रचनाएँ लिखी है:-

(i) दास्यभाव
(ii) सख्यभाव
(iii) माधुर्य भाव

किन्तु सूरदास ने अपनी रचनाओ मे सर्वाधिक महत्व माधुर्य भाव को दिया है तथा प्रेमपरक रचनाएँ अधिक लिखी। सूरदास के अनुसार कृष्ण प्रेम के साक्षात मूर्ति है। उन्होने गोपियो के प्रति उनके असीम प्रेम का परिचय भवरगीत प्रसंग मे दिया है।
तथा, सूरदास ने गोपीयो तथा राधा वल्लभी प्रसंग मे प्रेम का वर्णन किया है तथा उन्होने कृष्ण तथा गोपियो के बीच के अगाध प्रेम का जो जो चित्रण किया है वो सिर्फ सूर ही कर सकते है। सूरदास ने गोपियो तथा राधारानी तथा श्री कृष्ण के बीच के निस्वार्थ प्रेम का सुन्दर चित्रण किया है तथा अपने बड़े आँखो से भी प्रेम का कोई कोना छूटे नही है गोपियो के प्रेम तथा त्याग का वर्णन जो सूरदास ने किया है वो अद्वितीय तथा असीम है। जिसकी कल्पना भी नही की जा सकती।

Do Not Write anything in this Portion

खण्ड - ब

उत्तर संख्या - 2 [ख]

पुष्टिमार्ग की आचार्य परम्परा

सूरदास कृष्णभक्ति शाखा के सर्वोच्च कवि हैं इन्होंने आजीवन कृष्ण के लीलाओं का बचपन में वर्णन किया है। ये पहले मथुरा के घाटो पर रहा करते थे। ये बचपन से ही वैरागी प्रवृत्ति के थे। बचपन में ही 5 वर्ष की अवस्था में इन्होंने माता पिता को छोड़ दिया बाद में 18 वर्ष की अवस्था में अपना गृह त्याग दिया। अर्थात वैराग्य बचपन से ही इनके व्यक्तित्व में उपस्थित था।

गृह त्याग करके ये मथुरा तथा वृन्दावन की घाटों पर जीवन यापन करने लगे। यहाँ इनका मिलन शुद्धाद्वैतवाद के प्रवर्तक श्री वल्लभाचार्य जी से ही हुई। ये भी कृष्ण काव्य धारा के कवि एवं दार्शनिक थे। इन्होंने शुद्धाद्वैतवाद परम्परा के साथ कृष्ण भक्ति की समग्रता से एक पंथ बनाया जिसे पुष्टिमार्ग कहा गया इस पंथ के अनुयायी प्रायः कृष्ण के भक्त तथा कृष्ण काव्य के कवि होते थे।

पुष्टिमार्ग के कवियों का मुख्य उद्देश्य कृष्ण की भक्ति की पुष्टि करना अर्थात प्रीत प्राप्त कर अपने आराध्य में लीन हो जाना

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

पुष्टिमार्ग परम्परा में मुख्यतः तीन प्रकार की पुष्टि का प्रचार थी

(i) भक्ति पुष्टि
(ii) मर्यादा पुष्टि
(iii) पुष्टि पुष्टि

(1) भक्ति पुष्टि में भक्त भगवान के प्रति आसक्त तथा अनुरागी होता था उसकी भावना में भक्ति का प्रचार होता था। इस प्रकार की पुष्टि को भक्ति पुष्टि कहा गया

(2) मर्यादा पुष्टि में भक्त के प्रति भगवान के प्रति आसक्त हो जा था तथा उसमें लीन रहने लगता था इस प्रकार वो सम्पूर्ण काल आराध्य के कीर्तन तथा वर्णन में व्यतीत करता था।

(3) पुष्टि पुष्टि में भक्त भगवान को मिल जाता था अर्थात कृष्ण में रम जाता है तथा अपना सम्पूर्ण जीवन अपने आराध्य को समर्पित कर देता है पुष्टि पुष्टि में भक्त तथा भगवान में कोई अन्तर नहीं रह जाता वह परमात्मा में लीन हो जाता है तथा स्वयं को भूलकर के आराध्य के चरणों में अपना सर्वस्व समर्पण कर देता है।

Paper Code

15

पुष्टिमार्ग शाखा को अपने वाले कवि सूरदास कृष्ण काव्यधारा के आचार्य कवि थे। पुष्टिमार्ग के अपनाने वाले कवियों में मुख्य कवियों को अष्टछाप नामक एक मत में विहीत किया गया। अष्टछाप के कवि निम्नलिखित है।

i. परमानन्ददास	v. छीतस्वामी
ii. कुम्भनदास	vi. गोविन्दस्वामी
iii. सूरदास	vii. चतुर्भुजदास
iv. कृष्णदास	viii. नन्ददास

कृष्णभक्ति काव्यधारा

प्राचीन मध्यकालीन काल में समाज में व्याप्त अंधकार तथा निराशा से जन सामान्य हताहत तथा निराश था। जिसमें ऊर्जा समाप्त हो चुकी थी। इस व्यवस्था तथा निराशा को समाप्त करने के लिए कवियों ने भक्ति का सहारा लिया जिससे न जनसामान्य के हृदय में पुनः ऊर्जा का संचार कर सके तथा अपने आराध्य के प्रति भक्ति भावना जागृत कर अपना जीवन अपने आराध्य को समर्पित कर मोक्ष की प्राप्ति कर सके जिससे उनका जीवन को लक्ष्य की सिद्धि हो सके। अतः इस

काल मे कवियो ने भक्तिपरक रचनाए लिखी। जिनमे अनेक भक्त तथा अनेक भगवान तथा अनेक मत तथा सम्प्रदाय शामिल थे।

सर्वप्रथम काव्य रचना करने मे भक्ति को मूल के रूप मे अपनाने वालो मे मुख्यतः दो प्रकार की धारनाए थी

(i) सगुण भक्तिधारा
(ii) निर्गुण भक्तिधारा

सगुण भक्तिधारा के कवियो ने अपने आराध्य के सगुण साकार रूप की अराधना की तथा उनके साकार रूप का वर्णन किया वही निर्गुण काव्य भक्ति धारा के कवियो ने अपने आराध्य के निर्गुण रूप की अराधना की तथा निर्गुण निराकार ब्रह्म को केन्द्रित स्थापित किया।

सगुण भक्ति-धारा।

सगुण भक्ति धारा के कवियो ने भगवान की मूर्ति पूजा तथा अपने आराध्य के साकार रूप के लीलाओं का बखान किया इन्होने राम तथा कृष्ण तथा अन्य ईष्ट के साकार स्वरूप की अराधना की

Do Not Write anything in this Portion

आगे चलकर सगुण भक्तिधारा दो भागो मे बट गई जिनका विवरण प्रस्तुत है —

सगुण भक्तिधारा

रामाश्रयी भक्तिधारा | कृष्णाश्रयी भक्ति धारा

रामाश्रयी भक्तिधारा के कवियो ने राम के साकार रूप की अराधना की तथा राम को अपने ईश्वर के रूप मे प्रदर्शित किया। इनमे - तुलसी, मैथिलीशरणगुप्त प्रमुख है

कृष्णाश्रयी काव्य धारा

श्रीकृष्ण को अपने अराध्य के रूप मे पूजने तथा उनकी लीलाओ का वर्णन करने वाले कवियो के समूह को को कृष्णभक्ति काव्यधारा के कवि के रूप मे प्रतिष्ठित किया गया। इस धारा के कवि श्री कृष्ण के जीवन चरित्र तथा उनकी लीलाओ तथा उनके प्रेम प्रसंगो का वर्णन अपने काव्य मे करते थे ये कवि सर्वप्रथम श्री कृष्ण के भक्त थे बाद मे कवि। ये श्री कृष्ण को अपने अराध्य के रूपमे पूजते तथा उनकी कृपा का वर्णन करते थे इनमे कुछ का विवरण निम्नलिखित है।

(i) सूरदास (ii) रसखान

(iii) मीराबाई श्री हरिदास इत्यादि।

खण्ड – ख

उत्तर संख्या → 3(ख)

सूरदास कृष्णभक्ति काव्य धारा के प्रमुख कवियों में से है। इन्होंने कृष्ण के भक्ति तथा वर्णन में जो यश प्रकाशित किया है वो किसी अन्य कवि के पास नहीं है। सूरदास ने श्री कृष्ण के भक्ति में विश्व का कोना कोना झांक दिया है। सूर का कृष्ण काव्य वर्णन अप्रतिम है इन्होंने इतनी सरलता ... कोमलता से काव्य रचनाएं की है। इनका स्थान उच्च कोटि के भक्त कवियों में सम्मिलित किया गया है।

सूरदास की भक्ति भावना

सूरदास श्री कृष्ण के अनन्य भक्त है इन्होंने अपने काव्य में इतनी सरलता से श्री कृष्ण की वर्णन किया है जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती सूरदास एक उच्चकोटि के भक्त तथा कवि है। इन्होंने अपने काव्य में मनोहारिता तथा कोमलता का जो सजीव चित्रण किया है वो अद्वितीय है।

Do Not Write anything in this Portion

सूरदास ने अपने काव्य मे भक्ति के साथ साथ दर्शन का भी उचित ध्यान रखा है।
कही कही उन्होंने अपनी मधुरता और काव्य कौशलता से पाठको हृदय को भरा है तो कही कही व अपनी वाग्विदग्धता को भी परिचय दिया है। इन्होंने कृष्ण की सच्ची भक्ति को है तथा स्वयं बाह्य आडम्बरो तथा अन्य सामाजिक बुराइया के लिए भक्ति को [illegible] कर देने वाले पाखण्डो से दूर रहने की सलाह भी दी है।
इससे सूर के दर्शन के सम्बध मे ज्ञान का परिचय मिलता है।

सूर ने कृष्ण काव्य में अपनी भक्ति का सम्पूर्ण परिचय दिया है। सर्वप्रथम वे श्री कृष्ण के अनन्य भक्त है बाद मे एक कवि है अतः इस कृष्ण सूर के काव्य भक्ति को सच्ची झाँकी देखने को मिलती है तथा पढ़न मात्र से ही आभास हो जाता है कि सूर ने जीवन को अपने आराध्य को समर्पित कर दिया है।

सूरदास ने कृष्णभक्ति करने मे जीवन भर लीन होकर भजन कीर्तन किए है। काफी समय पश्चात भजन कीर्तन करते वक्त उनकी मुलाकात या भेट श्री वल्लभाचार्य जी से हुई उन्ही के आशीर्वाद से सूरदास ने काव्य मे श्री कृष्ण की काव्य रचना की शुरुआत की तथा अपने भक्ति

Paper Code A01090479 20

भाव को अपने रचनाओ मे प्रदर्शित कर जन सामान्य का कल्याण किया। सूरदास ने श्री कृष्ण की लीला का गान मुख्यतः दास्य भाव से किया क्योंकि वे उन्हें अपना आराध्य मानते थे। सूरदास ने भक्ति करने के मा पाँच भाव प्रदर्शित किए है।

i. दास्यभाव से भक्ति
ii. सख्यभाव से भक्ति
iii. वात्सल्य भाव से भक्ति
iv. माधुर्य भाव से भक्ति
v. शांत भाव से भक्ति

(i) दास्यभाव से भक्ति — सूरदास ने अपने काव्य मे मुख्यतः दास्यभाव की भक्ति का वर्णन किया है इनके अनुसार प्रभु के चरणो की वंदना अत्यन्त सुखकारी है तथा इनकी वंदना से सभी कार्य सफल हो जाते है। सूरदास स्वयं को श्री कृष्ण का दास मानते है इन्होने दास्य भाव की भक्ति का वर्णन अपने प्रसंग विनय के पद मे की है यथा उन्होंने अपने आराध्य की चरणो की वंदना करते हुए उनके महत्ता को दर्शाया है —

Do Not Write anything in this Portion

चरन कमल बंदौं हरि राई
जाकि कृपा पंगु गिरी लंघै, अंधे को सब दरसाई

(2) सख्यभाव की भक्ति — सूरदास ने प्रभु की भक्ति का अन्य रूप उन्हें सखा के रूप में मानने से दर्शाया है जैसे उद्धव उनके सखा थे किन्तु वे श्री कृष्ण के अनन्य भक्त भी थे —

''मैं तो मया मैया बलिहारी''

(3) वात्सल्य भाव की भक्ति — सूर ने वात्सल्य भाव की भक्ति का बखान गोकुल लीला में किया है। माँ यशोदा का श्री कृष्ण के प्रति अगाध प्रेम भक्ति का ही परिचायक है वात्सल्य से अभिभूत व्यक्ति को श्री कृष्ण की बाललीलाओं में जो आनंद की प्राप्ति होती थी वो अन्य कहीं नहीं मिल सकती है। मां यशोदा के माध्यम से सूर ने कृष्ण के बाल रूप की अनन्य आराधना की है।

(4) माधुर्य भाव की भक्ति — माधुर्य भाव की भक्ति में भक्त अपने आराध्य को अपने प्रेमी के रूप में पूजता है तथा उसकी वंदना करता है। गोपियों के मन में श्री कृष्ण के प्रति प्रेम

Do Not Write anything in this Portion

उनकी भक्ति भाव का ही प्रतीक थी। गोपिया श्री कृष्ण से अपार प्रेम करती थी। उनके लिए प्रेमी भी वही थे और आराध्य भी वही थे श्री कृष्ण से बिछड़ के भी उन्ही में लीन रहती थी। तथा उनका मन श्री कृष्ण के साथ ही मथुरा चला गया है। उद्धव से वो कहती है—

उद्धव मन न भये दस बीस,
एक ही हता सो कृष्ण संग चला गयो।

(5) शांत भाव की भक्ति— शांत भाव की भक्ति का मूल पूर्णता सारे कवि है इस प्रकार की भक्ति मे स्वामी सेवक सम्बंध होता है तथा भक्त अपने आराध्य का गुणगान हर दशा मे कर सकता है तथा अपने आराध्य के प्रति आसक्त हो जाता है जिसे आराधना के करने लिए भक्त अपने आराध्य की छवि की भी आवश्यकता नही रहती वो स्वयं को परमात्मा मे मिला लेता है। इस परम्परा के कवि मुख्य संत कवि होते है जिन्होंने अपने काव्य मे अपने आराध्य को परमात्मा और स्वयं को आत्मा मानकर परमात्मा मे लीन होने का प्रयास किया है।

Paper Code

23

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

24

Do Not Write anything in this Portion

X